25/7/2020

श्लोकसं०-26

"अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि॥"

अनुवाद -"हे महाबाहु अर्जुन। यदि तुम इस आत्मा को सदा उत्पन्न होनेवाला तथा सदा मरनेवाला मानो तो भी तुम इसप्रकार से दुःख (शोक) नहीं कर सकते हो।"

कारण कि कहा गया है- जिसका जन्म होता है उसका नष्ट होना निश्चित होता है तथा जिसका अंत होता है उसका जन्म अवश्य होता है।

श्लोक सं०-27

"जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥"

अनुवाद - जन्म लेनेवाले का मरण नियत है तथा मृत्यु को प्राप्त करनेवाले का पुनः जन्म लेना निश्चित है। इसप्रकार ~~अपरि~~ अनिवार्य अर्थों के संदर्भ में तुम शोक (विषाद) नहीं कर सकते हो। अर्थात् तुम्हारे द्वारा किया गया विषाद समुचित नहीं है।

श्लोकसं०-28

"अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना॥"

अनुवाद - सृष्टि (संसार) से पूर्व सकल भूत समूह अनभिव्यक्त रहते हैं। जन्म से मृत्यु के पूर्व पर्यन्त काल में अभिव्यक्त होते हैं तथा मरण के पश्चात् पुनः अव्यक्त होते हैं। अतएव उनके विषय (संदर्भ) में विषाद करना निरर्थक है।

संसार के समस्त प्राणी जन्म लेने के समय से मरण के पहले तक के काल में अभिव्यक्त रहते हैं। अर्थात् इनकी उपस्थिति रहती है किन्तु मृत्यु के बाद ये अनुपलब्ध हो जाते हैं।

"आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाऽप्येनं वेद न चैव कश्चित॥"

हिन्दी अनुवाद - इसमें आत्मा के दुर्बोधत्व का प्रतिपादन किया गया है-

" कोई इस आत्मा को आश्चर्य (विस्मय) के समान देखता है, कोई इसे आश्चर्य के समान बताता है, कोई इसे आश्चर्य के समान सुनने का प्रयास करता है, किन्तु इस आत्मा को देखकर, कहकर तथा सुनकर कोई जान नहीं सका॥ "
(इसे) (पाया)

आशय- इस आत्मा को देखकर, कहकर तथा सुनकर इसे समुचित रूप से नहीं जाना जा सकता। यह आत्मा सर्वथा दुर्बोध (गूढ़/कठिन/अस्पष्ट) है। विरला ही ज्ञानी पुरुष इस आत्मा का विस्मय से साक्षात्कार करता है। इसीप्रकार आत्मा का उपदेश करनेवाला तथा आत्मा को सुननेवाला भी विरलता से (दुर्लभता) से प्राप्त होता है।

श्लोकसं०-30

"देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि॥"

हिन्दीअनुवाद - इसमें आत्मा के नित्यत्वप्रतिपादन का समाहार किया गया है।

"हे भरतवंशी अर्जुन! सकल प्राणियों के ~~शरीर में यह~~ शरीर में रहनेवाला आत्मा सर्वदा अवध्य (वध/मारे जाने के योग्य नहीं) रहता है। इसप्रकार तुम्हारा किसी भी जीव (भीष्म तथा द्रोण) के संदर्भ में विषाद करना समुचित नहीं है।

श्लोकसं०31 "स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते॥"

प्रसंग- इसमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा धार्मिक युद्ध को अर्जुन के लिए स्वधर्म कहागया है।

हिन्दीअनुवाद- "अपने धर्म को दृष्टि में धारणकर तुम युद्ध से पीछे नहीं हट सकते। कारण कि धार्मिक युद्ध से बढ़कर अधिक कल्याणमय मार्ग दूसरा कोई नहीं होता।

वस्तुतः क्षत्रियों का स्वधर्म दो प्रकार का होता है-

(1) धर्म की रक्षा के लिए राज्य संवर्धन हेतु किया गया युद्ध तथा

(2) प्रजा की रक्षा हेतु कृत युद्ध ।

श्रीगीता के 18 वें अध्याय के 43 वें श्लोक में क्षत्रियों के स्वधर्म का प्रतिपादन हुआ है - शौर्य, तेज, दक्षता, युद्ध से पलायनवाद की वृत्ति का अभाव, दान देना तथा नियमन करना - ये सब क्षत्रियों के नैसर्गिक धर्म हैं।

श्लोकसंख्या-32

" यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ "

संदर्भ - क्षत्रियों को धर्मयुद्ध में संलग्न क्यों होना चाहिए ?
इसके विषय में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं -

हिन्दी अनुवाद - अर्जुन ! नैसर्गिक रूप से प्राप्त युद्ध खुले हुए स्वर्ग के द्वार की भाँति है। इसप्रकार के युद्ध को भाग्यवान क्षत्रिय ही प्राप्त करते हैं। अर्थात् इसप्रकार के युद्ध में मृत क्षत्रिय वीर स्वर्ग को प्राप्त करता है। इसीकारण कहा गया है कि ऐसा युद्ध विस्तृत भाग्य से मिलता है।

श्लोकसंख्या-33

" अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ "

(संदर्भ)
हिन्दी अनुवाद - भगवान श्रीकृष्ण प्रतिपादित करते हैं कि युद्ध कर्तव्य है ऐसा सिद्ध होने पर भी " यदि तुम इस धर्ममय युद्ध को नहीं करोगे (मैं नहीं भागलोगे) तो इसप्रकार तुम अपने धर्म तथा यश (आंतरिक समर्पण) को खोकर नरक को भी प्राप्त करोगे । "

श्लोकसंख्या-34 " अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ "

संदर्भ - यशस्वी मानव के लिए अपयश दारुण दुःख को अभिव्यक्त करता है। इसका प्रतिपादन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं -

" सबलोग तुम्हारी नष्ट न हो सकनेवाली (अक्षय) निन्दा (कलंक के समान) करेंगे तथा प्रतिष्ठित पुरुष के लिए अपयश (कलंक) मृत्यु से अधिक दुःख को प्रदान करता है।